मूल्य – 5 रु.

शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल की छुट्टियाँ
बच्चों की मौज मस्ती का टाईम

Tara
बुजुर्गों के लिए...

तारांशु

मासिक

अप्रैल, 2015

वर्ष 3, अंक 7, पृ.सं. 20

ऐसा वृद्धाश्रम भी होता है क्या?

आनन्द वृद्धाश्रमवासी श्रीमती एवं श्री हेमराज पौद्दार की सुपुत्री नेहा विहानी दिनांक 27.03.2015 को जब उनसे मिलने पहली बार यहाँ पहुँची तो उन्हें इस वृद्धाश्रम की सुविधाएँ देखकर सुखद आश्चर्य हुआ। उनके मानस में ऐसी-वृद्धाश्रम की इमेज थी की मोटा अनाज और चने की पतली दाल खाने को मिलती हो एवं एक ही हॉल में पचासों लोग सोते हों जबकि यहाँ तो खान-पान, चिकित्सा एवं मनोरंजन सब उच्च स्तरीय है एवं पौद्दार दम्पति को आनंदित जीवन व्यतीत करते देख हुए उन्हें बहुत संतोष हुआ।

हैप्पी बर्थ डे ईश्वरी जी!

आनन्द वृद्धाश्रमवासी श्रीमती ईश्वरी भाटिया ने दिनांक 27.03.2015 को अपना 75 वाँ जन्मदिवस समस्त वृद्धाश्रम वासियों एवं तारा संस्थान परिवार के साथ हर्षोल्लास से मनाया।

आशीर्वाद
डॉ. कैलाश 'मानव'
संस्थापक एवं प्रबन्ध न्यासी,
नारायण सेवा संस्थान (ट्रस्ट), उदयपुर

आभार
श्री एन.पी. भार्गव
मुख्य संरक्षक, तारा संस्थान,
उद्योगपति एवं समाजसेवी, दिल्ली

श्रीमती शमा – श्री रमेश सचदेवा
संरक्षक,
उद्योगपति एवं समाजसेवी, दिल्ली

श्री सत्यभूषण जैन
संरक्षक,
प्रमुख समाजसेवी, दिल्ली

प्रकाशक एवं सम्पादक
कल्पना गोयल

दिग्दर्शक
दीपेश मित्तल

कार्यकारी सम्पादक
तखत सिंह राव

ले-आउट व ग्राफिक डिजाइनर
गौरव अग्रवाल

संयोजन सहायक
जगदीश मुण्डानिया

अनुक्रमणिका

विषय		पृष्ठ संख्या
आनन्द वृद्धाश्रम गतिविधियाँ	–	02
अनुक्रमणिका	–	03
मस्ती / विजन फाउण्डेशन ऑफ इंडिया	–	04
सम्पादकीय : उम्मीद एक अच्छे भविष्य की....	–	05
संदेश : एक सम्मानजनक विदाई....	–	06
साथी हाथ बढ़ाना....	–	07
स्वास्थ्य – अचूक नुस्खे	–	08
गौरी योजना / तृप्ति योजना	–	09
प्रेरक प्रसंग	–	10
मोतियाबिन्द जाँच – ऑपरेशन हेतु चयन शिविर	–	11–13
नवीन प्रकल्प – एक शिविर मेरा भी....	–	14
तारा संस्थान में स्वागत सम्मान / अभिनन्दन	–	15
विविध – मनोकामना एवं महाशंख	–	16
दानदाताओं के फोटो एवं आभार	–	17–18
सम्पर्क सूत्र – तारा संस्थान	–	19

आशीर्वाद - डॉ. कैलाश 'मानव', संस्थापक - नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

श्रीमती कल्पना गोयल अपने पूज्य पिता डॉ. कैलाश 'मानव' की सन्निधि में,

'तारांशु' – स्वत्वाधिकारी, श्रीमती कल्पना गोयल द्वारा 240–ए, हिरण मगरी, सेक्टर – 6, उदयपुर (राज.) 313002 से प्रकाशित तथा मुद्रक श्री सत्यप्रकाष कुमार शर्मा द्वारा सागर ऑफसेट प्रिन्टर, इण्डिया प्रा. लि. प्लॉट नं. 518, इकोटेच – III, उद्योग केन्द्र एक्टेंषन – II, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेष) में मुद्रित, सम्पादक – श्रीमती कल्पना गोयल

मस्ती

नाचते रहो : तुम हँसते रहो, नाचते रहो, मुस्कुराते रहो, सदा खिलखिलाते रहो, खुश रहो और गुनगुनाते रहो, मेरा क्या है, लोग तुम्हें ही पागल समझेंगे!

दिमाग की जाँच : अगर आप अपने दिमाग की जाँच करना चाहते हैं ये उपाय अपनाएँ : एक गाय के सामने खड़े हो जाएँ... अगर गाय आपके पास आती है समझ लेना कि दिमाग में भूसा है... अगर दूर चली जाए... तो समझ लेना खाली है!

टूटा हुआ प्यार : चार चीजें जो हमेशा आपकी आँखों में आँसू लाती हैं.. टूटा हुआ प्यार.. टूटी दोस्ती... किसी करीबी की मौत और... प्याज!

सूरज लात मारे : काश एक दिन आप आसमान पर सो जाएँ.. सितारे आपका बिस्तर बनें, चाँद आपका तकिया हो, रात आपका चादर बन जाए, और.. सुबह सूरज एक लात मारे और कहे... ''उठ जा नालायक, अपने घर जा!''

VISION FOUNDATION OF INDIA

SEE THE FEELING, FEEL THE SIGHT

Vision Foundation of India के सौजन्य से दिनांक 16.02.2015 से 20.03.2015 के मध्य 200 निर्धन व्यक्तियों के मोतियाबिन्द ऑपरेशन किए गए।

उम्मीद एक अच्छे भविष्य की....

तारांशु दिसम्बर 2014 के अंक में रेखा लौहार नाम की महिला का जिक्र किया था जो कि अपने पति की मृत्यु और ससुराल वालों के घर से निकाले जाने के बाद एक बाड़े में अपनी तीन छोटी–छोटी बेटियों के साथ रह रही है। अभी कुछ दिन पहले रेखा मेरे पास आई। उन्हें अपने बच्चों को स्कूल भेजने और उनकी पढ़ाई में दिक्कत आ रही थी और बेहद चिंतित थी अपने बच्चियों के भविष्य को लेकर। मैंने उन्हें तारा संस्थान के ही शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल के बारे मे बताया जहाँ उनके जैसी ही विधवा महिलाओं के बच्चों की शिक्षा, बैग, किताबें सब निःशुल्क है.... एक स्लिप स्कूल की प्रिंसिपल के नाम बनवाई जिसमें रेखा जी की दोनों छोटी बच्चियों को स्कूल में निःशुल्क एडमिशन करवाने के निर्देश थे। बड़ी बच्ची चूंकि 9 वीं क्लास में है और शिखर भार्गव स्कूल अभी 8वीं तक ही है सो उसकी पढ़ाई वहाँ संभव नहीं थी.... बच्चियों को लाने, ले जाने के लिए ऑटो खर्च भी तारा संस्थान द्वारा ही दिया जाएगा। रेखा के बच्चों को शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल में एडमिशन देकर जो खुशी हुई उसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती। तारा संस्थान पिछले 3–4 सालों से ऐसी विधवा महिलाओं को गौरी योजना के तहत 1000 रु. महीना दे रहा है जिनके छोटे बच्चे हैं और इनमें से अधिकतर इस राशि को अपने बच्चों पर खर्च करना बताती हैं। लगभग एक वर्ष पूर्व विधवा महिलाओं के बच्चों के लिए शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल प्रारंभ हुआ तो ऐसा लगता है जैसे ईश्वर हाथ पकड़ कर आगे चला रहा है क्योंकि हमारी योजनाओं में यह स्कूल की सोच कहीं दूर दूर तक भी नहीं थी लेकिन पिछले वर्ष तारा संस्थान के मुख्य संरक्षक आदरणीय श्री नगेन्द्र प्रकाश जी भार्गव व श्रीमती पुष्पा जी भार्गव आए तो उन्होंने इन विधवा महिलाओं के बच्चों की पढ़ाई की व्यवस्था करने की इच्छा जताई और एक माह से भी कम के समय में ''शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल'' प्रारंभ हुआ। अब कभी भी कोई विधवा महिला या बहुत गरीब महिला अपने बच्चों के भविष्य की चिंता लेकर आती है। तो मैं सीधा उन्हें शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल भेज देती हूँ.... एक उचित समाधान मिल गया है..... और हाँ परम् आदरणीय भार्गव साहब और उनके परिवार का तहेदिल से आभार व्यक्त करना चाहती हूँ कि वे उन बहुत सारे बच्चों का भविष्य बनाने में अपना सहयोग दे रहे हैं। जो शायद बिना शिक्षा के निर्मम दुनिया में गुम हो जाते.....

आदर सहित....

कल्पना गोयल

एक सम्मानजनक विदाई....

आनन्द वृद्धाश्रम में 17 मार्च को हमारे एक आवासी श्री रघुनाथ जी का स्वर्गवास हो गया – 22 अगस्त, 2014 को उन्हें उदयपुर के एक व्यावसायी श्री देवेन्द्र जैन लेकर आए थे। बहुत ही कम बोलते थे तो उनके बारे में.... थोड़ी बहुत जानकारी थी वो यह थी कि वे अपने भाई के पास ही कुछ काम करते थे और जब उम्र के कारण शरीर ने साथ नहीं दिया तो भाई ने उन्हें निकाल दिया। वे जैन जी की दूकान के बाहर ही सोते थे तो देवेन्द्र जी उन्हें तारा संस्थान लेकर आए। कुछ दिनों बाद ही उनकी आँखों का ऑपरेशन तारा नेत्रालय में किया गया। नवम्बर 2014 में उन्हें मस्तिष्क ज्वर हो गया.... अस्पताल में भर्ती कराया गया और वे स्वस्थ हो गए। स्वर्गवास से थोड़े दिनों पहले वे बीमार हुए, हॉस्पीटल में भर्ती भी कराया उनके परिजनों को सूचना दी तो उनका भतीजा एक बार आया और मिलकर चला गया। उनके स्वर्गवास पर भी उनके परिजनों से बात की..... पर उन्होंने कहा कि आप अपने स्तर पर जो भी करना है कर लीजिए। तो दाह संस्कार भी तारा संस्थान द्वारा कराया गया।

तारा संस्थान में अब तक 8 आवासियों का स्वर्गवास हुआ है उनमें से एक या दो की अंतिम क्रिया उनके परिजनों द्वारा हुई लेकिन बाकी सभी की अंतिम क्रियाएँ तारा संस्थान द्वारा की गई.... वैसे अंतिम क्रिया कौन करता है इसका बहुत ज्यादा महत्त्व नहीं है मृत शरीर को क्या पता कि उसकी चिता को अग्नि कौन दे रहा है, बात सिर्फ सम्मानपूर्वक इस दुनिया से विदाई की है.....

लेकिन रघुनाथ जी एक दूकान के बाहर बीमार और वृद्ध अवस्था में अपना जीवन कैसे बिताते ये बहुत ही महत्त्वपूर्ण है और यहीं पर आनन्द वृद्धाश्रम की उपयोगिता है.... जहाँ रघुनाथ जी ने अंतिम 7 महीने सम्मान के साथ जीते हुए निकाले वो रहम पर नहीं थे और पूरे अधिकार के साथ रहे। सबसे बड़ी बात उनके पास बात करने के लिए 30–40 जने साथ थे, ज्यादा बोलते नहीं थे लेकिन आपके आसपास कोई है यह भी अपने आप में विश्वास दिलाता है। जब वे बीमार हुए तो उन्हें उन्हीं के साथियों या वृद्धाश्रम की बाइयों ने खाने के लिए पूछा और जब नहीं खा पा रहे थे तो उन्हें मनुहार कर कहा जाता कि दूध तो पी लो.... जब बहुत अधिक बीमार हो गए और कभी बिस्तर गंदा करते तो उन्हें, उनके कपड़ों और बिस्तर को साफ करने वाला कोई तो था.... जब अस्पताल में भर्ती हुए तो भी हर वक्त उनके पास कोई–न–कोई रहने वाला भी कोई था....

तारा की सफलता इस बात में नहीं मानते कि आनन्द वृद्धाश्रम में कितने ज्यादा लोग रह रहे हैं या कितने ज्यादा आँखों के ऑपरेशन कर पा रहे हैं या कितनी ज्यादा महिलाओं या कितने ज्यादा बुजुर्गों को तृप्ति में सहायता मिल रही है इन सब की संख्या तो जैसे–जैसे लोग सहयोग देगें अपने आप बढ़ती जाएगी पर यदि एक भी रघुनाथ जी हमारे यहाँ अंतिम कुछ महीने में, जब उन्हें सबसे ज्यादा सहारे की जरूरत थी, सुकून से रहे तो ये हमारी सबसे बड़ी सफलता है... और मुझे लगता है कि हम सफल हुए.....

ईश्वर रघुनाथ जी की आत्मा को शांति प्रदान करें....

दीपेश मित्तल

साथी हाथ बढ़ाना...

तारा संस्थान में जो भी कार्य हो रहे हैं उसके लिए हो रही आय का मुख्य स्रोत दान ही है और जब कार्य निरंतर चल रहे हैं तो उसके लिए दान का निरंतर आना अतिआवश्यक है। और यह तभी संभव है जन नये नये लोग संस्थान से जुड़े वो हमारे सेवा कार्यों को जाने और हमें सहयोग करें। संस्थान द्वारा अपने स्तर पर लोगों को जोड़ने के प्रयत्न निरंतर किए जाते रहे हैं लेकिन फिर भी मुझे लगता है कि नये दानदाताओं को जोड़ने में वो लोग अधिक सक्षम होंगे जिन्होंने तारा में दान दिया है क्योंकि वे हमसे तभी जुड़े जब उन्होंने हमें जाना और हम पर विश्वास किया और उनमें से कुछ लोगों ने तारा के सेवाकार्यों को अपनी आँखों से देखा।

इसीलिए एक निवेदन हमारे दानदाताओं से करना चाहते हैं कि आप अपने परिजन, दोस्त और जानकारों को तारा संस्थान से जोड़े। उनसे एक छोटा सा आग्रह करें कि वे बहुत छोटी शुरूआत करें 5 रु. प्रतिदिन से यानी साल का 1825 रु. 5 रु. प्रतिदिन बहुत छोटी राशि है लेकिन हमारे कुछ दानदाता भी अपने कुछ मित्रों को इस तरह से जोड़ेंगे तो तारा के सेवाकार्यों को निरंतर चलाने में हमें आसानी होगी। नीचे दिए गए प्रपत्र में 4 खाली स्थान हैं जिनमें आप ऐसे 4 लोगों के नाम – पते व फोन नम्बर हमें दे सकते हैं जो 5 रु. प्रतिदिन सहयोग करना चाहते हैं या आपके विचार से कर सकते हैं। हम भी संस्थान के स्तर पर उनसे बात कर उन्हें इस नेक कार्य से जुड़ने के लिए प्रेरित करेंगे मुझे पता है खुद देना आसान होता है और दूसरों को इस कार्य से जोड़ना थोड़ा कठिन होता है लेकिन बेबस लाचार बुजुर्गों और विधवा महिलाओं के चेहरों पर मुस्कुराहट लाने के लिए आप थोड़ी कठिनाई पार करेंगे...

इसी विश्वास के साथ....

कल्पना गोयल

नाम	**नाम** ....
पता	**पता** ....
....	....
....	....
मोबाइल नं.	**मोबाइल नं.** ....
नाम	**नाम** ....
पता	**पता** ....
....	....
....	....
मोबाइल नं.	**मोबाइल नं.** ....

अचूक नुस्खे

मस्तिष्क की कमजोरी दूर करने के लिए सेब एक अचूक इलाज है। ऐसे रोगी को प्रतिदिन एक सेब खाने को दें। इसके अलावा रोगी को दोपहर तथा रात को भोजन में कच्चे सेबों की सब्जी दें। शाम को एक गिलास सेब का रस दें तथा रात को सोने से पहले एक पका मीठा सेब खिलाएँ। इससे एक महीने में ही रोगी की दशा में सुधार आने लगता है।

जिन लोगों की आँखें कमजोर हैं उन्हें एक ताजा सेब की पुल्टिस कुछ दिनों तक आँखों पर बाँधनी चाहिए। यदि भोजन के साथ प्रतिदिन ताजा मक्खन तथा मीठा सेब खाएँ तो नेत्र ज्योति तो तेज होती ही है साथ ही चेहरा लाल हो जाता है।

दिल के लिए शहद बहुत शक्ति बढ़ाने वाला है। सोते वक्त शहद व नींबू का रस मिलाकर एक ग्लास पानी पीने से कमजोर हृदय में शक्ति का संचार होता है। पेट के छोटे–मोटे घाव और शुरुआती स्थिति का अल्सर शहद को दूध या चाय के साथ लेने से ठीक हो सकता है। सूखी खाँसी में शहद व नींबू का रस समान मात्रा में सेवन करने पर लाभ होता है।

शहद से माँसपेशियाँ बलवती होती हैं। बढ़े हुए रक्तचाप में शहद का सेवन लहसुन के साथ करना लाभप्रद होता है। अदरक का रस और शहद समान मात्रा में लेकर चाटने से श्वास कष्ट दूर होता है और हिचकियाँ बंद हो जाती हैं। संतरों के छिलकों का चूर्ण बनाकर दो चम्मच शहद उसमें फेंटकर उबटन तैयार कर त्वचा पर मलें। इससे त्वचा निखर जाती है और कांतिवान बनती है।

तलवे में गर्मी के कारण आग पड़ने पर पुदीने का रस लगाना लाभकारी होता है। हरे पुदीने की 20–25 पत्तियाँ, मिश्री व सौंफ 10–10 ग्राम और कालीमिर्च 2–3 दाने इन सबको पीस लें और सूती, साफ कपड़े में रखकर निचोड़ लें। इस रस की एक चम्मच मात्रा लेकर एक कप कुनकुने पानी में डालकर पीने से हिचकी बंद हो जाती है।

छोटी इलायची और पीपरामूल का चूर्ण घी के साथ सेवन करने से हृदय रोग में फायदा होता है। एक चम्मच शहद प्रतिदिन खाने से हृदय की कमजोरी दूर होती है। अगर का चूर्ण शहद में मिलाकर प्रतिदिन खाने से हृदय की शक्ति बढ़ जाती है। गुड़ व घी मिलाकर खाने से दिल मजबूत होता है। अलसी के पत्ते और सूखे धनिए का क्वाथ बनाकर पीने से हृदय की दुर्बलता मिट जाती है।

निम्न रक्तचाप हो तो गाजर के रस में शहद मिलाकर पिएँ। उच्च रक्तचाप में सिर्फ गाजर का रस पीने से रक्तचाप संतुलित हो जाता है। सर्पगंधा को कूटकर रख लें। सुबह–शाम 2–2 ग्राम खाने से बढ़ा हुआ रक्तचाप सामान्य हो जाता है। प्रतिदिन लहसुन की कच्ची कली छीलकर खाने से कुछ दिनों में ही रक्तचाप सामान्य हो जाता है।

हमारे सेवा प्रकल्प :-

गौरी योजना

श्रीमती रेखा देवी छीपा – (उम्र 30 वर्ष, नि. उदयपुर) के पति चाय का ठेला लगाते थे। सन् 2011 में उनकी दुर्घटना से अचानक मृत्यु हो गई। ससुराल पक्ष के बहुत निर्धन होने के कारण रेखा देवी अपने पीहर वालों के साथ रहने लगी पर उनकी भी स्थिति विशेष अच्छी नहीं है। इनके 2 नाबालिग पुत्र हैं। स्वयं अनपढ़ हैं एवं कोई काम वगैरह नहीं आता इसलिए अति दयनीय स्थिति में है। तारा संस्थान ने इन्हें गौरी योजना में लेकर कुछ सहारा प्रदान किया है।

श्रीमती अजोड़िया – (उम्र 25 वर्ष, नि. नांदडी, जोधपुर) के पति 3 साल पहले चल बसे। इनके 2 पुत्र एवं 1 पुत्री (सब नाबालिग) हैं। घर में और कोई पुरूष नहीं है इसलिए कोई मददगार नहीं है। कभी–कभार मजदूरी मिल जाती है परंतु उससे गुज़ारा नहीं चलता इसलिए पास–पड़ोसियों और पीहर वालों की मदद से जैसे–तैसे जीवन बसर कर रही हैं। तारा संस्थान को इनकी दयनीय स्थिति ज्ञात होने पर इन्हें गौरी योजना में सम्मिलित कर 1000/– प्रतिमाह की पेंशन देना आरम्भ किया जिससे इन्हें कुछ सम्बल मिला है।

मानवीय संवेदनाओं को आहत करने वाली असहाय विधवा महिलाओं की पीड़ाओं को कुछ कम करने के प्रयास के प्रति यदि आप भी इच्छुक हों, तो कृपया प्रति विधवा महिला 1000 रु. प्रतिमाह की दर से 01 माह, 03 माह, 06 माह, 01 वर्ष या इससे भी अधिक अवधि के लिए अपना दान-सहयोग 'तारा संस्थान' को प्रेषित करने का अनुग्रह करें।

तृप्ति योजना

श्रीमती बादामी बाई बन्जारा – (उम्र 60 वर्ष, नि. भीण्डर, उदयपुर) इनके पति का 5 वर्ष पूर्व देहान्त हो चुका था। बादामी बाई के कोई अन्य संतान नहीं सिर्फ एक 30 वर्षीया पुत्री है – वो भी विकलांग। अशिक्षित बादामी बाई के पास आजीविका का कोई साधन नहीं है। अतएवं तारा संस्थान की तृप्ति योजना के अन्तर्गत इन्हें मासिक राशन एवं 300/– नकद दिए जा रहे हैं ताकि यह असहाय वृद्धा जैसे तैसे जीवन बसर कर सके।

श्री भग्गाजी रावत – (उम्र 70 वर्ष, नि. सवीना, उदयपुर) इस वृद्ध को इस उम्र में सहारे हेतु कोई पुत्र नहीं है। दो पुत्रियाँ थी जो विवाहित हैं। परिवार में पति–पत्नी दोनों मजदूरी करके गुजारा करते हैं लेकिन बड़ी दयनीय स्थिति हैं। इसलिए तारा संस्थान ने इन्हें तृप्ति योजना के तहत राहत देना शुरू किया है।

'तृप्ति योजना' के अन्तर्गत प्रत्येक बुजुर्ग को 1500/- मूल्य की खाद्य-सामग्री सहायता प्रतिमाह वितरित की जा रही है।

वर्तमान में तृप्ति योजना के अन्तर्गत 252 बुजुर्ग बन्धुओं को प्रतिमाह उपर्युक्त मात्रानुसार खाद्य सामग्री पहुँचाई जा रही है। आपके सहयोग सौजन्य से यह संख्या 500 करने का लक्ष्य है।

आपसे प्रार्थित खाद्य-सामग्री सहयोग-सौजन्य राशि रु. 4500 (3 माह), रु. 9000 (6 माह), रु. 18000 (एक वर्ष)

प्रेरक प्रसंग :-

शिवाजी को बुढ़िया की सीख

बात उन दिनों की है, जिन दिनों छत्रपति शिवाजी मुगलों के विरूद्ध छापा–मार युद्ध लड़ रहे थे। एक दिन रात को वे थके–माँदे एक वनवासी बुढ़िया की झोंपड़ी में पहुँचे और कुछ खाने के लिए माँगा। बुढ़िया के घर में केवल चावल था, सो उसने प्रेमपूर्वक भात पकाया और उसे ही परोस दिया। शिवाजी बहुत भूखे थे, सो झट से भात खाने की आतुरता में उँगलियाँ जला बैठे। हाथ की जलन शान्त करने के लिए फूँकने लगे। यह देख बुढ़िया ने उनके चेहरे की ओर गौर से देखा और बोली–'सिपाही तेरी सूरत शिवाजी जैसी लगती है और साथ ही यह भी लगता है कि तू उसी की तरह मूर्ख है।'

शिवाजी स्तब्ध रह गये। उनने बुढ़िया से पूछा– 'भला शिवाजी की मूर्खता तो बताओ और साथ ही मेरी भी।'

बुढ़िया ने उत्तर दिया– 'तूने किनारे– किनारे से थोड़ा– थोड़ा ठण्डा भात खाने की अपेक्षा बीच के सारे भात में हाथ डाला और उँगलियाँ जला लीं। यही मूर्खता शिवाजी करता है। वह दूर किनारों पर बसे छोटे– छोटे किलों को आसानी से जीतते हुए शक्ति बढ़ाने की अपेक्षा बड़े किलों पर धावा बोलता है और हार जाता है।' शिवाजी को अपनी रणनीति की विफलता का कारण विदित हो गया। उन्होंने बुढ़िया की सीख मानी और पहले छोटे लक्ष्य बनाए और उन्हें पूरा करने की रीति– नीति अपनाई। इस प्रकार उनकी शक्ति बढ़ी और अन्ततः वे बड़ी विजय पाने में समर्थ हुए।

शुभारंभ हमेशा छोटे– छोटे संकल्पों से होता है, तभी बडे संकल्पों को पूरा करने का आत्मविश्वास जागृत होता है।

रामप्रसाद बिस्मिल

रामप्रसाद बिस्मिल, भारतमाता के ऐसे अमर सपूत थे, जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिएअपने प्राणों की आहुति दे दी। उनका जन्म सन् 1897 में उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर में हुआ था। उनके पिता मुरलीधर शाहजहांपुर के नगरपालिका में काम करते थे। 19 दिसंबर सन् 1927 में ब्रिटिश सरकार ने रामप्रसाद बिस्मिल को फांसी दे दी। अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल का सरफरोसी की तमन्ना ही वह गीत है जिसे गाते हुए कितने ही देशभक्तों ने फांसी के फन्दे को चूम लिया। इस गीत की कुछ पंक्तियाँ नीचे दी जा रही है

''सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है ज़ोर कितना बाजुए कातिल में है।
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ए आसमान,
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है।
करता नहीं क्यूँ दूसरा कुछ बातचीत,
देखता हूँ मैं जिसे वो चुप तेरी महफील में है।''

मोतियाबिन्द जाँच - ऑपरेशन हेतु चयन शिविर

तारा संस्थान द्वारा निर्धन वृद्ध बन्धुओं की आँखों में सामान्यतः पाये जाने वाले मोतियाबिन्द के निदान और ऑपरेशन हेतु चयन के लिए शिविर आयोजित किये जाते हैं। दूरस्थ एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले मोतियाबिन्द ग्रस्त बन्धुओं की स्थिति अधिक ही पीड़ादायक है, क्योंकि प्रथम तो उन्हें मोतियाबिन्द–ऑपरेशन की सुविधा आसानी से उपलब्ध नहीं है एवं द्वितीय, निर्धनता उनकी चिकित्सा में बड़ा अवरोधक है। तारा संस्थान ने ऐसे निर्धन बन्धुओं की जाँच हेतु शिविर लगाने एवं चयनित मोतियाबिन्द ग्रस्त बन्धुओं के शिविर स्थल के निकटवर्ती कस्बे या शहर में स्थित अधुनातन सुविधाओं से सम्पन्न नेत्र चिकित्सालयों या संस्थान के उदयपुर, दिल्ली व मुम्बई स्थित 'तारा नेत्रालय' में सर्वथा निःशुल्क ऑपरेशन करवाने का कार्य प्रारंभ किया है। निःशुल्क सुविधाओं में मोतियाबिन्द की जाँच, दवाइयाँ, लेंस, ऑपरेशन, चश्मे, रोगियों का परिवहन, भोजन तथा देखभाल आदि सम्मिलित है।

दानदाताओं के सौजन्य से माह जनवरी, 2015 से मार्च, 2015 के मध्य आयोजित शिविरों का संक्षिप्त विवरण

तारा नेत्रालय, उदयपुर में आयोजित शिविर

शिविर दिनांक	सौजन्यकर्त्ता	ओ.पी.डी.	चयनित रोगी	चश्मे	दवाई
06.02.2015	श्रीमती चंचल देवी - श्री शान्तिलाल जैन, मरूधर धाकड़ी (सोजत सिटी)	120	15	27	67
09.02.2015	श्रीमती जमना देवी - श्री ओमप्रकाश टांक, माणकलाव, जोधपुर	147	12	79	101
10.02.2015	श्री किशन लाल जी गोयल (गोयल एजेंसी, चैन्नई)	132	34	56	74
12.02.2015	श्री भाविक हार्दिक बाफना - श्री निर्मल बाफना, रायपुर (छत्तीसगढ़)	125	35	47	63
27.02.2015	श्री परेश भाई मेहता एवं समस्त मेहता परिवार, निवासी - मुम्बई (महा.)	114	17	36	47
01.03.2015	श्री बृजमोहन शर्मा एवं श्री जनार्दन शर्मा, कोटा	76	09	24	43
10.03.2015	श्री देवेन्द्र जागड़ा	115	17	36	51
11.03.2015	श्री मदन लाल गांधी	131	14	41	54
27.03.2015	श्री अमरीश गोयल, संगरूर (पंजाब)	93	12	27	46

तारा नेत्रालय, दिल्ली में आयोजित शिविर

10.02.2015	श्री सी.पी. चड्डा जी एवं सपरिवार, निवासी - वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली 08	134	08	49	94
28.02.2015	श्रीमती रजनी गुप्ता एवं श्री भानु प्रकाश गुप्ता, निवासी - कृष्णा नगर, दिल्ली 5	110	03	31	60
13.03.2015	श्री नितीन जैन - श्रीमती प्रीति जैन	165	10	45	50

तारा नेत्रालय, मुम्बई में आयोजित शिविर

06.02.2015	श्री करतार सिंह एवं श्रीमती कौशल्या राना, कांगडा (हिमाचल प्रदेश)	84	15	34	52

मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 30 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर - 151000 रु.
चश्मा जाँच - चश्मा वितरण - दवाई सहयोग राशि, प्रति शिविर - 21000 रु.

श्रीमती रूपा बाई, उदयपुर

श्री मंगला जी, उदयपुर

श्रीमती सुधेश, दिल्ली

श्री राधा कृष्ण, दिल्ली

श्रीमती रामिला पटेल, मुम्बई

स्व. श्री पोण्टी चड्डा

स्व. सरदार कुलबन्त सिंह चड्डा की प्रेरणा से ''The Ponty Chaddha Foundation'' के सौजन्य से आयोजित शिविर

शिविर का एक दृश्य

शिविर दिनांक	स्थान	ओ.पी.डी.	चयनित रोगी	चश्मे	दवाई
15 मार्च, 2015	गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा, शिव नगर, जनकपुरी, नई दिल्ली 58	327	09	216	274
22 मार्च, 2015	गुरुद्वारा श्री गुरु अमरदास सच्च खण्ड दरबार सेवा संग, मुलुण्ड (वे.), मुम्बई	187	10	85	67
29 मार्च, 2015	गुरुद्वारा केतकीपाड़ा दहीसर (पूर्व), मुम्बई	377	21	165	177

इस शिविरों में चयनित सभी रोगियों के तारा नेत्रालय, दिल्ली एवं मुम्बई में निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन करवाए गए हैं।

मानवीय सेवा सौजन्य के लिए तारा संस्थान उदयपुर , दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी एवम् वेव इन्फ्राटेक, दिल्ली के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है एवं स्व. सरदार कुलबन्त सिंह चड्डा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

अन्य दानदाताओं के सौजन्य से देशभर में आयोजित शिविरों की झलकियाँ

शिविर दिनांक	सौजन्यकर्त्ता	स्थान	ओ.पी.डी.	चयनित रोगी	चश्मे	दवाई
29.01.2015	श्रीमती शमा जी – श्री रमेश जी सचदेवा	नजफगढ़, दिल्ली	240	6	114	186
29.01.2015	श्री कान्तू भाई, श्री विपुल भाई, श्री अरविन्द भाई, नवसारी	चिरवा, उदयपुर	154	2	36	71
01.02.2015	सुरजबाई पन्ना लाल मेहता चेरिटेबल ट्रस्ट	माहिम, मुम्बई	147	7	55	68
08.02.2015	श्रीमती इच्छा बिन्दू सेवा केन्द्र, विले पार्ले	मलाड़ (पूर्व), मुम्बई	215	18	90	82
11.02.2015	श्रीमती शमा जी – श्री रमेश जी सचदेवा	दिल्ली 30	430	11	152	237
15.02.2015	बरेली के समस्त शहरवासी, बरेली, उत्तरप्रदेश	बरेली (यू.पी.)	366	20	133	232
15.02.2015	श्रीमती सुषमा जैन .र्मपत्नी श्री सत्यभूषण जैन	गाजियाबाद (यू.पी.)	748	30	412	676
15.02.2015	श्री जसवंतलाल गिरधरलाल शाह (टुवावाला)	कान्दीवली (वे.), मुम्बई	206	11	69	75
16.02.2015	श्री उम्मेदराज जी, वासुमती सिंघवी एवं सिंघवी परिवार	भूपालसागर, चित्तौड़गढ़	160	11	30	126
17.02.2015	बड़ौदा शक्ति चैरिटेबल ट्रस्ट	मुलुण्ड (वे.), मुम्बई	315	12	200	72
22.02.2015	श्रीमती सवितापुरी एवम् श्रीमान प्रेम कुमार, जनकपुरी	विकास नगर, नई दिल्ली	662	4	150	250
01.03.2015	श्री जगदीश प्रसाद, हरद्वारीलाल गुप्ता, प्रीत विहार, दिल्ली	प्रीत विहार, दिल्ली	411	11	120	250
01.03.2015	श्री कल्याणमल कराड़ एवं विजयश्री ऑटो पार्ट्स	मंगलवाड़ चौराहा, चित्तौड़गढ़	182	11	59	165
08.03.2015	श्रीमान राधा किशन जी अग्रवाल सा. एवं समस्त परिवार	कसेर, उदयपुर	76	3	24	43
11.03.2015	जय श्री कृष्णा, दिल्ली	मावली, उदयपुर	270	19	50	204
15.03.2015	श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी श्री सत्यभूषण जैन	गाजियाबाद (यू.पी.)	1100	30	450	615
15.03.2015	तारा संस्थान, उदयपुर	फरीदाबाद (यू.पी.)	288	16	160	262
16.03.2015	श्री एस.एस. जैन महिला मण्डल (रजि.), ऋषभ विहार	गाँ.ी नगर, दिल्ली	357	33	211	334
21.03.2015	वैश्य युवा मैत्री संघ, दिल्ली	कमला नगर, दिल्ली	450	25	150	325
22.03.2015	जय श्री कृष्णा	नांगलोई, दिल्ली	991	30	200	400
22.03.2015	श्री संजय परिहार, निवासी – गवाड़ी, जम्मू एवं कश्मीर	खेरोदा, उदयपुर	150	9	22	125
23.03.2015	श्री विनोद चौहान, मंगोलपुरी	मंगोलपुरी, दिल्ली	611	7	176	346
26.03.2015	श्रीमती मनोहरमा .ावल	सागरपुर, नई दिल्ली	206	4	53	76
29.03.2015	जय श्री कृष्णा	प्रेम नगर, नई दिल्ली	1015	22	365	580
29.03.2015	श्री शिव दत्त एवं सुपुत्र श्री कृष्ण स्वरूप शर्मा, द्वारका	सीतापुरी, नई दिल्ली	566	8	200	400
29.03.2015	श्रीमती मनोहरमा जी धवल, बसन्त विहार, दिल्ली – 57	कानोड़, उदयपुर	130	10	30	106
31.03.2015	श्रीमती शमा जी – श्री रमेश जी सचदेवा	रनहौला, नई दिल्ली	425	08	147	250
31.03.2015	श्रीमती शमा जी – श्री रमेश जी सचदेवा	उत्तम नगर, दिल्ली	340	16	150	250

नवीन प्रकल्प :-

एक शिविर मेरा भी :

फरीदाबाद वासी श्री राजू अग्रवाल ने अपनी पुत्री का जन्मदिन अनूठे तरीके से मनाया। तारांशु के पिछले अंक में प्रकाशित एक शिविर मेरा भी योजना से प्रेरित होकर उन्होंने अपनी पुत्री शैफाली का जन्मदिन तारा संस्थान में मनाया इस अवसर पर उन्होंने एक नेत्र शिविर भी प्रायोजित किया।

शैफाली केक काटते हुए

अपने आनंद को परम–आनंद की तरफ बढाएँ! इंसान की फितरत है कि उसे समय–समय पर हर्ष और आनंद का उत्सव मनाने की आवश्यकता पड़ती है अन्यथा जीवन एक सुखी नदी सा प्रवाह बन कर रह जाता है। हम वार–त्योहार बड़े उल्लास के साथ अपने सगे–सम्बन्धियों और मित्रों सहित मनाते हैं। इन अवसरों पर हम महंगे कपड़े–लत्ते, आभूषण, पकवान, नाच–गाना, घूमना–फिरना, गिफ्ट देने–लेने और महंगी – 2 शॉपिंग वगैरह में लाखों रुपये पलक झपकाए बिना खर्च कर देते हैं। हम उन हंसी–ठिठोली के क्षणों को ही अपूर्व आनंद की अनुभूति मान लेते हैं। कई बार कुछ लोग एक वीकेंड पर ही बाहर खाने में 25–50 हजार रुपये खर्च कर देते हैं। जो लोग ये सब अफोर्ड कर सकते हैं उनके लिए ये सब मामूली बातें हैं – हम ये सारी चोचलेबाजी सिर्फ इसलिए करते हैं ताकि हम कुछ पलों का आनंद पा सके और सच तो ये है कि ये सारी मौज–मस्ती मात्र "रात गयी, बात गयी" से बढ़ कर कुछ नहीं है! अगले दिन वही फिर ढ़ाक के तीन पात! कहाँ गया आपका वो आनंद? चलिए फिर पैसे से मजा कुछ खरीदते हं! ये सिलसिला तब तक चलता रहेगा जब तक हम ये अहसास नहीं कर पाते हैं कि असली आनंद तो किसी निर्धन–निःशक्त के चेहरे पर मुस्कान देखने में है! उसका कोई मुकाबला नहीं है – यही ये परमानंद जिसके लिए हर जमाने में महापुरुषों अपनी ज़िंदगियाँ न्योछावर कर दी। सोचिये जरा, ये एक दो घंटे के मनोरंजन के खर्चे से दर्जनों निर्धन निःशक्त बुजुर्गों की आँखों की रोशनी लौटाई जा सकती है। जी हाँ! दुनिया में ऐसे भी लोग हैं जिनके जीवन को आपके जेब खर्च जितनी मदद से रोशन कर सकते हैं। "Thousands of candles can be lit from a single candle but the life of the candle will not be shortened. Happiness never decreases by sharing" हो सकता है कि आप महापुरुष ना बनना चाहेंगे, ना सही, लेकिन सिर्फ एक झलक तो पा लीजिये – जीवन के असली आनंद की। फिर देखिये आप को क्या अभूतपूर्व अनुभव होता! सिर्फ 15000/– के सहयोग से आप 5 बुजुर्गों का मोतियाबिंद ऑपरेशन करवाएँ! आपको मात्र सहयोग राशि देनी है बाकी सारा कार्य तारा संस्थान करेगी – मरीजों के परिवहन, जाँच, आँपरेशन, वार्ड केयर, दवाइयाँ एवं भोजन की व्यवस्था हम करेंगे! और दान दाता होने की खातिर इन सब कार्यों का श्रेय आपको दिया जाएगा! तो अपने उत्सव, त्यौहार या शादी–पार्टियों के उन खुशनुमा पलों को थोड़ा और सतरंगी बनाएँ – तारा संस्थान के सेवा प्रकल्पों में सहयोग करके! परोपकार परमानन्द!

रोगियों से बातचीत करते हुए शैफाली

सफलता मंत्र

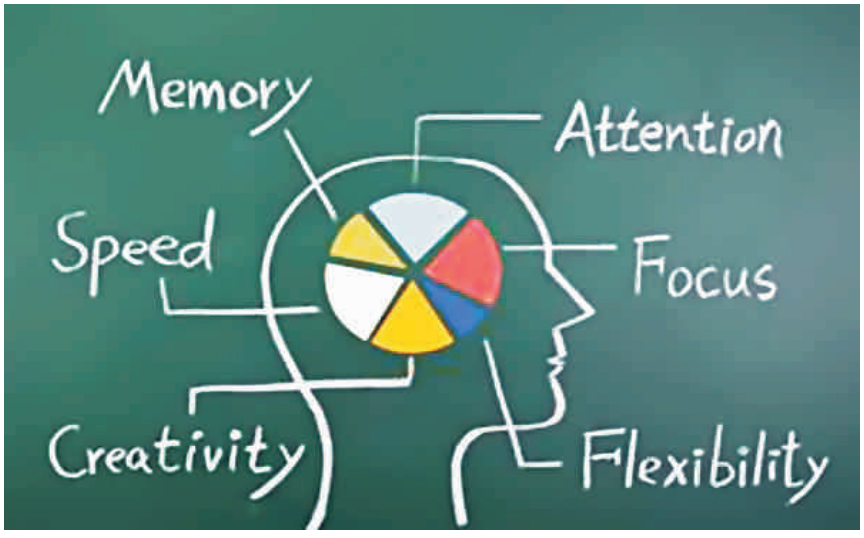

- ☑ सफलता हासिल करनी है तो शुरू से ही लक्ष्य निर्धारित कीजिए। सपना जरूर देखिए, क्योंकि इनके बिना हमें मालूम कैसे होगा कि हमारी मंजिल क्या है।
- ☑ अपने कीमती समय से थोड़ा समय अपने परिवार के लिये भी निकालिये, क्योंकि शायद जब आपके पास समय होगा तब, आपके पास ये खूबसूरत सा परिवार नहीं होगा।
- ☑ निश्चय ही आप विजयी होंगे, यदि आप अपनी दुर्बलता को अपनी ताकत में तब्दील करना सीख लें।
- ☑ मन को प्रभु की अमानत समझकर उसे सदा श्रेष्ठ कार्य में लगाओ।
- ☑ इस संसार को अलौकिक खेल और परिस्थतियों को अलौकिक खिलौने के समान समझकर चलो।
- ☑ सदा खुश रहना और खुशी बाँटना–यही सबसे बड़ी शान है।

तारा संस्थान में पधारे अतिथि महानुभावों का स्वागत सम्मान

श्री मनीबेन वी. पटेल, सूरत (गुजरात)

श्री नन्द किशोर, शहडोल (मध्य प्रदेश)

श्री मुरारी लाल एवं श्री राजुलमति जैन, हरदोई (मध्य प्रदेश)

श्री भारत भूषण भाटिया, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

श्री मुकेश खरे, आगरा (उत्तर प्रदेश)

श्री भविक हार्दिक बाफना - श्री निर्मल बाफना, रायपुर (छत्तीसगढ़)

''तारा परिवार का सौभाग्य कि आपने अभिनन्दन का अवसर प्रदान किया''

श्री मोहन लाल मीणा, जयपुर (राज.)

श्रीमती कमलेश कुमारी, पंचकुला

श्रीमती उषा अग्रवाल, बरेली (उत्तर प्रदेश)

श्रीमती प्रेम कुमारी, रूप नगर (पंजाब)

श्री सुशील कुमार गर्ग, आगरा (उत्तर प्रदेश)

श्री उदय चन्द अग्रवाल और परिवार, अलवर (राज.)

श्री अमित अग्रवाल, कानपूर (उत्तर प्रदेश)

आप भी यदि किसी असहाय बुजुर्ग बन्धु के लिए 'आनन्द वृद्धाश्रम' में आवास की मानवीय सुविधा उपलब्ध करवाने की सेवा भावना रखते हैं, तो कृपया प्रति बुजुर्ग 5000 रु. प्रतिमाह की दर से अपना दान सहयोग 'तारा संस्थान' को प्रेषित करने की कृपा करें।
01 माह - 5000 रु., 03 माह - 15000 रु., 06 माह - 30000 रु., 01 वर्ष - 60000 रु.

वृद्धाश्रम आवासियों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता है। उनके लिए वृद्धाश्रम की सभी सेवाएँ सुविधाएँ - भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्सा देखभाल आदि, सर्वथा निःशुल्क हैं।

मनोकामना एवं महाशंख

हम जो मांगते हो, उससे दुगुना भी मिल जाए, तो भी दौड़ नहीं मिटती.....

एक आदमी ने बहुत दिन तक परमात्मा की पूजा की । फिर परमात्मा का आविर्भाव हुआ। उस आदमी ने कहा कि मुझे कुछ वरदान दे दें। ऐसा वरदान दे दें कि जब भी मै जो मांगू मुझे मिल जाए । पास ही शंख रखा था पूजागृह में परमात्मा ने उठा कर वह शंख दे दिया और कहा कि यह सम्हाल, जो मांगेगा, तत्क्षण मिल जाएगा। इधर परमात्मा तिरोहित हुए उधर उस आदमी ने तत्क्षण कहा : एक लाख रुपया ! एक लाख रुपया मिल गया । घूरे के भाग्य फिरे ! उसने महल पर महल बनाए । बहुत धन की वर्षा हुई। मगर बेचैनी जैसी थी वैसी की वैसी रही। दुख जहाँ का तहाँ रहा। सच पूछो तो और ज्यादा हो गया। आशाएँ सब पुरी होने लगी, लेकिन निराशा मे कोई कमी ना आई। हताशा अपनी जगह खड़ी रही अब जो मांगता, मिलता। मगर क्या जो माँगो वह मिल जाये, उससे हल होता है ? मन कहता है : और मांग ! एक महल से क्या होगा? दो माँग ! दो से क्या होगा? लाख माँगे, मिल गए, ठीक है! रोज उसे जो मांगता मिलता, लेकिन परमात्मा को उसने धन्यवाद नहीं दिया।

एक रात एक संन्यासी उसके घर में मेहमान हुआ। संन्यासी ने यह देखा कि उसके पास शंख है, वह जो माँगता है, मिल जाता है। संन्यासी ने कहा कि यह शंख कुछ भी नहीं, मेरे पास महा शंख है। उस आदमी ने पुछा : महाशंख की क्या खूबी है? कहा तुम जितना मांगो, उससे दुगुना देता है । .यह तुम्हारा तो उतना ही देता है लाख मांगो , लाख देता है; मेरा लाख मांगो, दो लाख देता है । लोभ बड़ा । उस ग्रहस्थ ने कहा कि आप तो संन्यासी है, त्यागी है, व्रती है, आपको क्या करना ! आप मेरा शंख ले लो, मुझ गरीब को महाशंख दे दो ! उस जैसा अब कोई अमीर नहीं था, लेकिन वह कहता है : मुझ गरीब को! महाशंख दे दो!! संन्यासी ने महाशंख दे दिया । महाशंख बिलकुल जैसा संन्यासी ने कहा था वैसा ही था । उसे कहो, लाख रुपया दो । वह कहे, लाख क्या करोंगे, अरे , दो लाख ले लो! उससे कहो, अच्छा दो लाख दे दो, भइया! वह कहे, दो क्या करोगे, चार लाख ले लो! बस, वह बाते ही करे! लेने–देने का कोई सवाल ही नहीं। लेकिन तब तक संन्यासी जा चुका था । संन्यासी के कमरे मे जाकर देखा, संन्यासी तो शंख लेकर नदारत को गया था। यह महाशंख पकड़ा गया। ... महाशंख एक तरह का राजनेता रहा होगा। तुम जितना कहो, उससे दुगुना ले लो। लेना देना कुछ भी नहीं है! लेने देन की बात ही मत उठाओ। बस, वह दुगना करता ही चला जाए।

हमारा मन शंख भी है और महाशंख भी। हम जो मांगते है वह मिल जाए, तो और भी दौड़ नहीं मिटती। हम जो मांगते है उससे दुगुना भी मिल जाए, तो भी दौड़ नहीं मिटती। दौड़ मिटती ही नही। दौड़ बढ़ती ही चली जाती है। लोग दौड़ते दौड़ते अपनी क़ब्रों में गिर जाते हैं। मंजिल आती कहाँ, कब्र आती ! जीवन के लिए धन्यवाद नहीं उठता लेकिन । शिकायतें उठती है कि इतना क्यों नही दिया! यह भी तो हो सकता था, यह क्यों नही हुआ ? हमें अगर परमात्मा मिल जाये तो तुम झपट कर उनकी गर्दन पकड़ लोगे कि अब कहाँ जाते हो, रुको! क्यों मुझे सताया? जो मैंने मांगा, मुझे क्यों न मिला? औरों को सब मिला, मुझे कुछ भी न मिला।

हमारे जीवन की व्यवस्था शिकायत है। और जबकि इतना मिला है कि काश, हम उसे देख सको! और हमारे बिना किसी पात्रता के मिला है। बिना किसी योग्यता के। हमने अर्जित नहीं किया है। काश, हम उसे देख सको तो आभार उठे–आनंद का, अनुग्रह का। हमारे भीतर संगीत गूंजे; वही प्रार्थना है, वही व्यक्ति को धर्म में डुबा देती है। वही प्रार्थना व्यक्ति के जीवन में अमृत रस घोल देती है।

NAME AND PLACE OF THE DONORS, WE ARE GRATEFUL TO THEM

Donors are requested kindly to send their photographs alongwith Donation for publishing in TARANSHU

Mr. Indar Kumar & Mrs. Charulata
Lasur, Aurangabad

Mr. Indra Dev & Mrs. Santosh Gulati
Bulandshahar

Mr. Bishan Swaroop & Mrs. Bala Gupta
Karol Bag, Delhi

Mr. Champa & Mrs. Prabha Devi
Aurangabad

Mr. Ghanshyam Das & Mrs. Premlata Khejthal
Alwar (Raj.)

Mr. Sachin & Mrs. Mrs. Kavita Gupta
Bikaner (Raj.)

Mr. Anuj Jain & Mrs. Sarika Jain
Muradabad (UP)

Mr. Shripaal & Mrs. Saroj Jain
Jaipur (Raj.)

Mr. Mukesh & Mrs. Kavita Agrawal
Agra (UP)

Mr. Ranjit & Mrs. Rekha

Mr. M.L. Meena & Mrs. R. Meena
Jaipur (Raj.)

Mr. Amit & Mrs. Annurika Agrawal
Kanpur (UP)

Mr. Narendra Nath & Mrs. Radha Rani Jain
Agra (UP)

Mr. Rajendra Paal & Mrs. Saroj Sharma
Alwar (Raj.)

Mr. Nitin Yashshavi & Mrs. Roochi Jain
Kota (Raj.)

Mr. Nomchand Jain & Mrs. Urmila Jain

Mr. H.M. Lal & Mrs. Shakuntala Shrivastav
Kanpur

Mr. Rasbihari Khare & Mrs. Geeta Khare
Dhamtari (CG)

Mr. Rajesh Ahuja & Mrs. Sonia Ahuja
Muradab (UP)

Mr. Gulab Chand & Mrs. Moti Bai Sahu
Bhopal (MP)

Mr. Suresh Chandra & Mrs. Lakshy Ji

Mr. & Mrs. Naresh Chandra Verma
Gorakhpur (UP)

Mr. Rajendra & Mrs. Kanta with Pankaj
Sirsa (Haryana)

Mr. Kapil & Mrs. Pinki Garg with Family
Faridabad (Haryana)

NAME AND PLACE OF THE DONORS, WE ARE GRATEFUL TO THEM

Donors are requested kindly to send their photographs alongwith Donation for publishing in TARANSHU

Mr. B. K. Jain
Jaipur (Raj.)

Mrs. Sunita Jain
Jaipur (Raj.)

Mrs. Manish Jain
Jaipur (Raj.)

Mrs. Aayush Jain
Jaipur (Raj.)

Mr. Neeraj Agrawal
Mumbai

Mrs. Aanshu Agrawal
Mumbai

Mr. Parv Agrawal
Mumbai

Mr. Girdhar Lal Agrawal
Agra (UP)

Mr. Amit Goyal
Agra (UP)

Mrs. Krishna Dixit
Jhansi

Mr. Mannu Gupta
Jaipur (Raj.)

Mrs. Meena Gupta
Jaipur (Raj.)

Mr. Himanshu Agrawal
Jaipur (Raj.)

Miss. Saloni Agrawal
Jaipur (Raj.)

Mrs. Chandrakanta Bhargava
Ujjain (MP)

Mr. Gopal Krishan Batra
New Delhi

Lt. Mrs. Gyan Devi
Rajendra Nagar, Delhi

Mr. R.R. Gupta
Kota (Raj.)

Lt. Madan Lal Gupta
Ambala City (Haryana)

Mrs. Prava Devi
Khimra

Mr. D.D. Goyal
Faridabad (Haryana)

Mrs. Geeta Devi Kedia
Korba (CG)

Mr. Harsh Agrawal
Indore (MP)

Mrs. Aasha Arora
New Rajendra Nagar, New Delhi

Mr. Indra Paal Gangwar
Bareilly (UP)

Mrs. Sudha Sharma
Rampur (UP)

Lt. Mr. Suresh Saraf
Rohini, Delhi

Mr. R.P. Agrawal
Bareilly (UP)

Mr. Harish Arora
Jaipur (Raj.)

Mr. Prakash Veer Aary
Muradabad (UP)

Mr. Krishna Lal Arora
New Rajendra Nagar, New Delhi

Mrs. Jamuna Devi Surana
Agra (UP)

Mr. Kartik Dudhani
Alwar (Raj.)

Mr. Satish Nandlal Shahu
Nagpur

Miss Radhika Datt Pandey
Nagpur

Lt. Mr. Yajhraj Sharma
Jaipur (Raj.)

Mr. Munshi Lal Kumhar
Alwar (Raj.)

Mr. Rajkumar Goyal
Alwar (Raj.)

Mr. Badri Lal
Kanpur

Mrs. Usha Saxena
Muradabad (UP)

Mr. Vijayraj Choudhari
Rajendra Nagar, Indore

Mr. Mitesh Rajdev
Rajkot

FCRA

Tara Sansthan is registered under Foreign Contribution Regulation Act (FCRA) with the Govt of India for receiving Donations from Foreign Countries

'Tara' Contact Details - Office

Mumbai Office : Unit No. 1408/7, 1st Floor, Israni Indl. Estate, Penkarpara, Nr. Dahisar Check-post, Thane - 401104 (M.S.) INDIA
Jagdish Choubisa Cell : 07821855748, Shri Bharat Menaria Cell : 07821855755

Delhi Office: WZ-270, Village - Nawada, Opp. 720, Metro Pillar, Uttam Nagar, Delhi - 59
Shri Amit Sharma Cell : 07821855747

Surat Office : 295, Chandralok Society, Parwat Gaon, Surat (Guj.)
Shri Prakash Acharya Cell : 07821855751 (Raj.)

'Tara' Centre - Incharge

Shri S.N. Sharma
Mumbai (M.S.)
Cell : 09869686830

Smt. Rani Dulani
10-B/B, Viceroy Park, Thakur Village,
Kandiwali (W), Mumbai - 400 101, Cell : 09029643708

Shri Prahlad Rai Singhaniya
Hyderabad (A.P.)
Cell : 09849019051

Shri Pawan Sureka Ji
Madhubani (Bihar)
Cell : 09430085130

Shri Satyanarayan Agrawal
Kolkata
Cell : 09339101002

Shri Bajrang Ji Bansal
Kharsia (CG)
Cell : 09329817446

Smt. Pooja Jain
Saharanpur (UP)
Cell : 09411080614

Shri Naval Kishor Ji Gupta
Faridabad (HR.)
Cell : 09873722657

Shri Anil Vishvnath Godbole
Ujjain (MP)
Cell : 09424506021

Shri Vishnu Sharan Saxena
Bhopal (M.P.)
Cell : 09425050136, 08821825087

Lt. Col. A.V.N. Sinha
Lucknow
Cell : 09598367090

Shri Dinesh Taneja
Barelly (UP)
Cell : 09412287735

Area Specific Tara Sadhak

Shri Kamal Didawania
Area Chandigarh, Haryana
Cell : 07821855756

Shri Ramesh Yogi
Area Lucknow (UP)
Cell : 09694979090

Shri Rameshwar Jat
Area Gurgaon, Faridabad
Cell : 07821855758

Shri Sanjay Choubisa
Shri Gopal Gadri
Area Delhi
Cell : 07821055717, 07821855741

Shri Bhanwar Devanda
Area Noida, Ghaziabad
Cell : 07821855750

Shri Vikas Chaurasia
Area Jaipur (Raj.)
Cell : 09983560006

Donors Kindly NOTE

It you do not get any response from any of the above mentioned Mob. numbers, Kindly inform us at Mobile No. 09549399993 and / or 09649399993

INCOME TAX EXEMPTION ON DONATIONS

Donations to Tara Sansthan are TAX-EXEMPT under section 80G and 35 AC / 80GGA of I.T. Act. 1961 at the rate of 50% and 100%

Donation to Tara Sansthan may be sent by cheque/draft drawn in favor of Tara Sansthan, payable at Udaipur, OR may be remitted direct into any of the following Bank Accounts, with caopy of pay-in-slip and Donor's address to Tara Sansthan, Udaipur for expediting Donation Acknowledgment Receipt

Tara Sansthan Bank Account

ICICI Bank (Madhuban) A/c No. 004501021965 **IFS Code : icic0000045**
SBI A/c No. 31840870750 **IFS Code : sbin0011406**
IDBI Bank A/c No. 1166104000009645 **IFS Code : IBKL0001166**
Axis Bank A/c No. 912010025408491 **IFS Code : utib0000097**

HDFC A/c No. 12731450000426 **IFS Code : hdfc0001273**
Canara Bank A/c No. 0169101056462 **IFS Code : cnrb0000169**
Central Bank of India A/c No. 3309973967 **IFS Code : cbin0283505**

For online donations - kindly visit - www.tarasansthan.org **Pan Card No. Tara - AABTT8858J**

TARA NETRALAYA
WZ-270, Village - Nawada, Opp. 720, Metro Pillar, Uttam Nagar, Delhi - 59
DELHI HOSPITAL - Tara Netralaya, +91 9560626661, 011-25357026

TARA NETRALAYA
Unit No. 1408/7, 1st Floor, Israni Indl. Estate, Penkarpara, Nr. Dahisar Check-post, Meera Road, Thane - 401107 (M.S.) INDIA
MUMBAI HOSPITAL - Tara Netralaya, Shankar Singh Rathore +91 8452835042, 022 - 28480001

तारांशु (हिन्दी - अंग्रेजी) मासिक समाचार पत्र, अप्रैल, 2015

RNI. No. - RAJBIL/2011/42978, Postal Reg. No. - RJ/UD/29-102/2015-2017, Dates of Posting - 11th to 18th each month at Udaipur H.O.

'तारांशु' - स्वत्वाधिकारी, श्रीमती कल्पना गोयल द्वारा 240-ए, हिरण मगरी, सेक्टर - 6, उदयपुर (राज.) 313002 से प्रकाशित तथा मुद्रक श्री सत्यप्रकाश कुमार शर्मा द्वारा सागर ऑफसेट प्रिन्टर, इण्डिया प्रा. लि. प्लॉट नं. 518, इकोटेच - III, उद्योग केन्द्र एक्टेंशन - II, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेश) में मुद्रित, सम्पादक - श्रीमती कल्पना गोयल

तारा संस्थान के नि:शुल्क मानवीय सेवा प्रकल्प, आपसे प्रार्थित अपेक्षित सहयोग -सौजन्य राशि

नेत्र चिकित्सा सेवा (मोतियाबिन्द ऑपरेशन)

01 ऑपरेशन - 3000 रु., 03 ऑपरेशन - 9000 रु., 06 ऑपेरशन - 18000 रु., 09 ऑपरेशन - 27000 रु., 17 ऑपरेशन - 51000 रु.

नेत्र शिविर सौजन्य

मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 30 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर - 151000 रु.
चश्मा जाँच - चश्मा वितरण - दवाई सहयोग राशि, प्रतिशिविर - 21000 रु.

तृप्ति योजना सेवा
(प्रति बुजुर्ग खाद्य सामग्री सहायता)
01 माह - 1500 रु.
06 माह - 9000 रु.
01 वर्ष - 18000 रु.

गौरी योजना सेवा
(प्रति विधवा महिला सहायता)
01 माह - 1000 रु.
06 माह - 6000 रु.
01 वर्ष - 12000 रु.

आनन्द वृद्धाश्रम सेवा
(प्रतिबुजुर्ग)
01 माह - 5000 रु.
06 माह - 30000 रु.
01 वर्ष - 60000 रु.

एक विधवा महिला के बच्चे की शिक्षा हेतु वार्षिक सहयोग - 12000 रु.

सहयोग राशि - आजीवन संरक्षक 21000 रु., अर्जित ब्याज से दानदाता के नाम से इच्छित दिनांक को प्रतिवर्ष 2 मोतियाबिन्द ऑपरेशन,
आजीवन सदस्य 11000 रु., अर्जित ब्याज से दानदाता के नाम से इच्छित दिनांक को प्रतिवर्ष 1 मोतियाबिन्द ऑपरेशन (संचितनिधि में)

दान पर आयकर में छूट : तारा संस्थान को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G व 35AC/ 80GGA के अन्तर्गत आयकर में 50% व 100% छूट योग्य मान्य है।

निवेदन : कृपया अपना दान - सहयोग नकद या 'तारा संस्थान, उदयपुर' के पक्ष में देय चैक/ड्राफ्ट द्वारा संस्थान के पते पर प्रेषित करने का कष्ट करें, अथवा : अपना दान सहयोग तारा संस्थान के निम्नांकित किसी बैंक खाते में जमा करवा कर 'पे-इन-स्लिप' अपने पते सहित संस्थान को प्रेषित करें ताकि दान - सहयोग प्राप्ति रसीद आपको तत्काल भेजी जा सके।

ICICI Bank (Madhuban) A/c No. 004501021965	IFS Code : icic0000045	HDFC A/c No. 12731450000426	IFS Code : hdfc0001273
SBI A/c No. 31840870750	IFS Code : sbin0011406	Canara Bank A/c No. 0169101056462	IFS Code : cnrb0000169
IDBI Bank A/c No. 1166104000009645	IFS Code : IBKL0001166	Central Bank of India A/c No. 3309973967	IFS Code : cbin0283505
Axis Bank A/c No. 912010025408491	IFS Code : utib0000097	Pan Card No. Tara - AABTT8858J	

'तारा' के सेवा प्रकल्पों का कृपया टी.वी. चैनल्स पर प्रसारण देखें :-

'पारस' रात्रि 8.40 से 9.00 बजे

'आस्था भजन' प्रात: 8.40 से 9.00 बजे

'आस्था' रविवार दोपहर 2.30 बजे

बुक पोस्ट

Tara
बुजुर्गों के लिए...

तारा संस्थान

डीडवाणिया (रतनलाल) नि:शक्तजन सेवा सदन
236, सेक्टर - 6, हिरण मगरी, उदयपुर (राज.) 313002
मो. +91 9549399993, +91 9649399993

Email : info@tarasansthan.org, donation@tarasansthan.org
Website : www.tarasansthan.org